Part 1

प्रशन 27. कविवर प्रो0 तन्त्रनाथ झा रचित " वर्षा घोष " कविताक भावार्थ लिखू ।

उतर - प्रो0 तन्त्रनाथ झा अर्थशास्त्री होइतहुँ , मैथिली साहित्यक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छलाह । मैथिलीक महाकाव्य भंडारमे कीचक वध आ कृष्ण चरित द श्रीवृध्दि कैलनि त एकांकी निबंध आ मुक्तक काव्य रूपमे नमस्या आ मंगल - पंचाशिका द गेलाह मैथिलीक महान समालोचन प्रो0 रमानाथ झा विचारे प्रो0 तन्त्रनाथ झा मैथिली काव्य साहित्यमे एक विलक्षण कविक रूपमे प्रतिष्ठित छथि । हिनक कविताक मुख्य गुण थिक नवीनता । हिनक एहि नवीनतामे प्रयोग रहितहुँ बादक संकीर्णता कतहु नहि रहैत अछि , कारण ओ नवीनताक स्वीकार परम्पराक विद्रोहक हेतु नहि , विकासक हेतु करत छथि । हिनक काव्य - पेरणाक मूल उत्स थिक पाश्चात्य साहित्य जकरा ओ अपन मौलिक कविक प्रतिभासँ परिमार्जित कएल अछि । वर्षा - घोष प्रकृति वर्णनक संग समाजक सामंती - पूँजीपति पर व्यंग्य सेहो अछि ।

दुर्दिन नहि देखल एहन

आएल घनघोर कारी , झाँपी लेल नभ - मण्डल ,

सहस्रांशुक एको अंशुक कतहु पता नहि ।

दिनहुँ कैं अनहार भेल , बहइछ उनचास पवन ,

मूसलाधार वृष्टि होइछ निरन्तर ।

वर्षा - ऋतुक यर्थाथ चित्रण , नभ - मण्डल करी- कारी मेघसँ भरल अछि , सूर्यदेवक रश्मि विलोपित भेल अछि । दिनो मे अन्हार रातिक दृश्य उपस्थित अछि । दशो - दिशासँ वसातक झोंका आबि रहल अछि ताहिमे मूसलधार बरखा निन्तर भ रहल अछि । प्रकृति देवी धरा पर पानिक अम्वार लागल अछि । मेघक गर्जन - तर्जनसँ आँखि चोन्हरा जाइछ । कान बहरी भ गेल । ठनका शोर सँ सूतल लोक चेहा उठैत अछि । साहर - साहर करैत उठि बैसैत अछि - कान दूनू मूनि जेना वज्रपात होइत कप्पारिहि पर , शायद इन्द्रदेव क्रुध्द भेल छथि लोक सभ

पर तँ अन्धाधुन्ध वज्र चला रहल छथि । के जानय केकर अयुर्दा खटाएल छैक । जे जीवि रहल अछि ओ आयुर्बलहि खेपने जा रह रहल अछि ।

“ एहना समयमे

कानो - कान भरल एहि डबराक कातमे ,

पीअर - पीअर पसरल अछि

कतेक रास भेक ।

मूसलधार बरखासँ डबरा सब कनो - कान भरि गेल अछि , पीअर - ढाबुस वेंग़ सभक भरमार अछि । पीअर - वेंग केहन हर्षित भ , कण्ठ फारि - फारि एक स्वरसँ कलगान करैत अछि । समस्त जन - जीवन पराभवमे पड़ल अछि

“ गाबह बेड गाबह करइछ कलगान अपन ,

जीकेँ जुड़ाए लएह , करह सिहन्ता पूर ,

की करबहक लोक लए ।

ठनकासँ बहीर लोकक कानमे

कथी लए कनेको करतैक असरि

कतबो कए प्रयास करबह तोँ कर्कश - नाद ।